ISSN:2583-8849



डॉ. श्रीमती युगल सिंह
कोटा, राजस्थान

नारी तू नारायणी ,नहीं किसी से हीन।
तू ही जननी जगत की , तुझ बिन सब धनहीन ।

तूने पैदा नर किए, ध्रुव प्रह्लाद समान।
निर्बल तू मत बन अरी, तू है बहुत महान।।

नहीं मात्र श्रद्धा बने, नहीं भोग हेतु तेरा गात्र ।
तेरा शस्त्र शास्त्र बना, नहीं दया का पात्र।

दुनिया भर की हैं सदा,तेरे हाथ कमान।
तुझ बिन सूना घर लगे,हर घर की तू शान ।

आज शक्ति पहचान तू ,मत पड़ना कमजोर।
तेरी यश गाथा करें, दुनिया भर में शोर।।

मर्यादा में ही जाँचे ,नर नारी या भूप।
वर्जित सर्वत्र अति रहे, धन बल हो या रूप।।

मानव जीवन में सदा, आते हैं तूफान ।
पर्वत राई सा उड़े,साहस ले यदि ठान।।

कलयुग ऐसा आ गया, मातृ- पितृ को भूल।
बच्चे खोए अपने में ,समय हुआ प्रतिकूल।।

प्यार रहे परिवार में, अहम् यहाँ बेकार ।
डोरी रिश्तों की सदा, बाँधे बारंबार

रचना ऐसी हम रचे, ऊर्जस्वित हो प्राण ।
तमस मिटे अज्ञान का, सबका हो कल्याण।।